विचार बिन्दु

जीवन का एक क्षण करोड़ स्वर्ण मुद्राएं देने पर भी नहीं मिलता। –चाणक्य

त्रिदोष शामक आयुर्वेद चिकित्सा पर एक सामयिक दृष्टि

आयुर्वेद आयु का समग्र विज्ञान है जिसमें स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा एवं बीमार व्यक्ति की बीमावीं को दूर करने के संबंध में महत्वपूर्ण और मूलभूत सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं। अगर हम सिद्धान्त शब्द को व्यापक अर्थों में देखते हैं तो आयुर्वेद की तीन मूलभूत संहिताओं में कम से कम 3 हजार से अधिक स्पष्ट दिशा-निर्देश उपलब्ध हैं। इन दिशा-निर्देशों या सिद्धांतों के प्रतिपादन का कार्यकाल कम से कम आठवी या नौवीं शताब्दी ईसा-पूर्व से लेकर सातवीं शताब्दी ईसवी तक विस्तीर्ण है। इन निर्देशों में कुछ ऐसे निर्देशों जिनका सर्वाधिक उपयोग होता है, या जो एक से अधिक परिस्थितियों में लागू होते हैं, उनकी संख्या ही सैकड़ों में है। ये सभी सिद्धान्त आयुर्वेद की मूल आत्मा कहे जा सकते हैं और पिछले तीन हजार साल से इनका अनवरत उपयोग आयुर्वेदाचार्यों द्वारा होता आया है।

मूलभूत सिद्धान्त आज भी यथावत उपयोगी हैं, किन्तु हमें ज्ञान की अनंतता को नहीं भूलना चाहिये। ज्ञान की सीमायें अनन्त हैं। विगत 100 वर्षो में ही आयुर्वेद या उससे जुड़ी वनस्पतियों, द्रव्यों, चिकित्सा, रसायन और सिद्धांतों पर लगभग एक लाख से अधिक शोधपत्र तो वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित जर्नल्स में ही प्रकाशित हो जा चुके हैं। इसके साथ ही युक्ति-व्यपाश्रय, दैव-व्यपाश्रय एवं सत्वावजय के अर्न्तगत आने वाले विषयों और सिद्धांतों को भी सम्मिलित कर लें तो शोधपत्रों की संख्या कई लाख में बैठती है। स्वाभाविक है कि तीन हजार साल की लम्बी यात्रा में ज्ञान के नये आयाम भी विकसित हुये हैं। नवीन वैज्ञानिक शोध के साथ ही आयुर्वेदाचार्यों द्वारा पीढ़ियों से अर्जित किया जा रहा अनुभवजन्य ज्ञान भी जुड़ा है, जिससे आयुर्वेद सुदृढ़ हुआ है। आयुर्वेद में ज्ञान के उत्पादन की इस लम्बी यात्रा में कुछ ऐसे सिद्धान्त या निर्देश भी जुड़ सकने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता, जिनका उल्लेख मूलभूत संहिताओं में भले स्पष्ट रूप से न हो परन्तु समकालीन आयुर्वेद चिकित्सा में इनका महत्वपूर्ण स्थान हो सकता है। आज की चर्चा आयुर्वेद के मौलिक सिद्धांतों में हो रहे नवाचार या नवाचावीं सिद्धांतों पर केन्द्रित है। यहाँ प्रारंभ में ही यह स्पष्ट करना उपयोगी होगा कि आयुर्वेदाचार्य इन मसलों को विवाद का विषय कह सकते हैं, परन्तु मेरे विचार से समकालीन विश्व में आयुर्वेद को पूर्णरूपेण प्रतिष्ठापित करने में इस विचार-विमर्श का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

सर्वप्रथम आयुर्विज्ञान की समग्रता का सिद्धांत देखना उपयोगी होगा। मेरा व्यक्तिगत रूप से यह मानना है कि समाज, देश और विश्व का स्वास्थ्य आज इस बात पर निर्भर करता है हम विविध चिकित्सा पद्धतियों को देख और समझकर, आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धांतों के प्रकाश में विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण रखते हुये, समकालीन आयुर्वेद चिकित्सा कार्यों में उनका सामंजस्य बैठायें। नवाचावीं एवं त्वरित रूप से प्रभावी आयुर्वेद चिकित्सा हेतु मूल संहिताओं, वैज्ञानिक शोध एवं पीढ़ियों से जुड़ रहे अनुभवजन्य ज्ञान का पवींक्षण और प्रमाण-आधारित निर्णय समकालीन आयुर्वेद चिकित्सा के लिये अनिवार्य है। इसे आयुर्विज्ञान की समग्रता का सिद्धांत कहा जा सकता है। दूसरा विषय वैज्ञानिक प्रसंस्करण द्वारा औषधि-प्रभावकारिता-वृद्धि का सिद्धांत कहा जा सकता है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध से अनेक आयुर्वेद औषधियों में उपलब्ध सेकेंडवीं मेटाबोलाइटस (माध्यमिक चयापचयी द्रव्यों) के विविध संयोगों को बेहतर रूप से जाना और समझा जा सका है। संहिताओं में समान रोग के लिये अनेक द्रव्यों या योगों का वर्णन है। इन योगों में प्राय: सभी प्रभावी भी पाये गये हैं, तथापि किसी विशेष औषधियां योग की, किसी रोग विशेष के विरुद्ध, तुलनात्मक प्रभाविता को अब और बेहतर रूप में समझा जा सका है। यह प्रभाविकता पौधों में सेकेंडवीं मेटाबोलाइटस की अनुपातिक मात्रा पर निर्भर करती है। इसके साथ ही कुछ औषधीय पादपों में ऐसे विशिष्मोलीक्यूल्स की खोज भी हुई है, जो किसी प्रजाति विशेष में विशिष्ट औषधीय गुणों के लिए मूल रूप से उपयोगी हैं।

शोध से इन मेटाबोलाइटस की समुचित मात्रा जो किसी रोग विशेष एवं व्यक्ति विशेष के लिये कारगर हो सकती है, उस पर भी शोध हुआ है। प्रभावोत्पादकता एवं सुरक्षा के मध्य तालमेल करते हुयेशोध से विकसित एवं घनीभूत औषधियां रोगों को ठीक करने में शीघ्रतापूर्वक प्रभावी भी पायी गयी हैं। इनमें जल-घुलनशील एक्सट्रैक्ट, अल्कोहल-घुलनशील एक्सट्रैक्टया वसा में घुलनशील एक्सट्रैक्ट प्रमुख हैं। इनमें औषधि-विशेष में आज तक ज्ञात सेकेंडवीं मेटाबोलाइटस का फुल-स्पेक्ट्रमएक्सट्रैक्ट या घनीभूत द्रव्य चिकित्सा में बहुत उपयोगी और अधिक प्रभावी होता है। यही कारण है कि आज फुल-स्पेक्ट्रमएक्सट्रैक्ट वाली औषधियों का बाज़ार में बोलबाला बढ़ता जा रहा है और आयुर्वेदाचार्यों द्वारा चिकित्सा में इनका अधिकाधिक उपयोग हो रहा है। तीसरे, चौथे और पांचवे मुख्य सिद्धांतों को एक साथ समझना उपयोगी होगा। मैं इन्हें त्रिदोष-भड़काऊ जीवनशैली का सिद्धांत, त्रिदोष-भड़काऊ काल का सिद्धांत और त्रिदोष-शामक या त्रिदोष नियामक रसायन-प्रभाव का सिद्धांत कहता हूँ। हालाँकि, आयुर्वेद की संहिताओं में रसायन चिकित्सा का मूल उद्देश्य स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा है। तथापि, समकालीन समाज में शायद ही ऐसा कोई संदर्भ-पुरुष मिल सके जिसके दोष, अग्नि, घातुयें, उत्सर्जन क्रियायें सम हों और आत्मा, इंद्रियाँ व मन निर्विकार हो। वस्तुत: हर व्यक्ति एक से अधिक स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रसित है।

स्वस्थ जीवनशैली औषधि का प्रतिदिन उपयोग करें। वसा और शर्करा के माध्यम से कुल ऊर्जा-प्राप्ति में कमी लाना, भोजन में फल, सब्जियों, फलियों, साबुत अनाज और सूखे मेवे बढ़ाना, नियमित रूप से शारीरिक गतिविधियों, व्यायाम, योग, ध्यान आदि में शामिल होने को प्राथमिकता दें।

बुरा मानिये या भला, वास्तविकता यह है कि आज वे पुरुष या महिलायें विरले ही मिलते हैं जिनकी दिनचर्या, रात्रिचर्या या ऋतुचर्या, वास्तव में प्रज्ञापराध या असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग से मुक्त हो (अगर आप उनमें से एक हैं तो आप हमावीं शोध का विषय हैं)। स्वाभाविक है कि ऐसी स्थिति में वात, पित्त और कफ तो दिन-रात भड़कते रहते हैं। ऐसी स्थिति में यदि दोष-आधारित चिकित्सा प्रारंभ भी करें तो भी निदान-परिवर्जन, अर्थात रोग का कारण समाप्त करना, मुश्किल हो जाता है। हमारा काल आहार-विहार के सत्यानाश का काल हो रहा है। ऐसे समय में जब रोग होने के बाद भी रोगोत्पत्ति के मूल कारणों से मुक्ति पा सकने की दिशा में नहीं बढ़ पा रहें हों, तब सर्वदोषप्रकोपक स्थिति सामने ही है। इसे आप त्रिदोष-भड़काऊ जीवनशैली का सिद्धांत और त्रिदोष-भड़काऊ काल का सिद्धांत कह सकते हैं।

ऐसी परिस्थितियों में, स्वस्थ हो रहे रोगी के स्वास्थ्य की रक्षा हेतु रसायन प्रयोग एवं रोग-निवारण हेतु चिकित्सा एक साथ किया जाना अनिवार्य है। इस सिद्धान्त के अनुसार रोग को ठीक करने के लिये युक्ति-व्याश्रपयी आयुर्वेदाचार्य द्वारा कितना भी सटीक योग क्यों न तय किया जाये, वह तब तक शीघ्र-प्रभावोत्पादक एवं श्रेष्ठ फलदायी नहीं रहेगा जब तक कि रसायन योगों को साथ-साथ नहीं दिया जाये। इसका तात्पर्य यह हुआ कि आज कोई भी औषधि-पत्रक रसायन-विहीन नहीं हो सकता है। आधुनिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो जहाँ एक ओर औषधि रोग-शमन में मदद करती है, वहीं रसायन ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन को कम करते हैं। ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और इनफ्लेमेशन में कमी आते ही रोग-शमनकावीं योग अधिक प्रभावी और त्वरित कार्य करते हैं। यही कारण है कि रोग शमन हेतु किसी भी निर्दिष्ट योग की पूर्ण फलश्रुति या परिणाम, रसायन योगों को साथ में दिये बिना समकालीन सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों में मिलना संभव नहीं होता। एनी शब्दों में देखें तो त्रिदोष शामक चिकित्सा का सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि त्रिदोष-भड़काऊ काल में रह रहे लोगों, जिनके आहार-विहार, स्वस्थवृत्त व सद्वृत्त का घालमेल हो गया हो, या पूवीं तरह दरकिनार हो चुका हो, उनके त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) अस्त-व्यस्त ही रहते हैं। अत: आज आयुर्वेद की त्रिदोष-शामक चिकित्सा ही पूर्ण-प्रभावकावीं एवं शीघ्र-फलदायी हो सकती है।

आज की इस चर्चा का हमारे जीवन में महत्त्व क्या है? व्यक्तिगत स्तर पर हमें यह ध्यान रखना होगा कि हम आयुर्वेद और आयुर्वेदाचार्यों की मदद से स्वस्थ बने रहने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ें। स्वस्थ जीवनशैली औषधि (हेल्दी लाइफस्टाइल मेडिसिन) का प्रतिदिन उपयोग करें। वसा और शर्करा के माध्यम से कुल ऊर्जा-प्राप्ति में कमी लाना, भोजन में फल, सब्जियों, फलियों, साबुत अनाज और सूखे मेवे बढ़ाना, नियमित रूप से शावींरिक गतिविधियों, व्यायाम, योग, ध्यान आदि में शामिल होने को प्राथमिकता दें। व्यसन-मुक्त जीवन, संतुलित भोजन, शांत जगह में रात्रि की नींद, व्यायाम और सद्भावना को जीवनयापन का अंग बनायें। और अंत में आयुर्वेदाचार्यों से आग्रह है कि वे हर रोगी के रोग-शमन में त्रिदोष-शामक रसायन चिकित्सा की सार्थकता पर धनात्मक दृष्टिकोण से विचार और क्रियान्वयन करें। साथ ही उनसे आग्रह यह भी है कि अपने प्रमाण-आधार को समग्रता प्रदान करते हुये आहार, निद्रा, व्यायाम, व सदवृत्त के युक्ति युक्त संयोजन को चिकित्सा-पत्रक का अंग बनाने पर भी ध्यान दें।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

कटीले फूल

● **आयुष कॉलेजों में अब उपस्थिति बायोमेट्रिक से।**

कोई नई बात नहीं है, आने व जाने की उपस्थिति मशीन पर कर देंगे, बीच के समय अपना काम निबटा देंगे।

● **थोक कपड़ा कारोबारी आज से बेमियादी हड़ताल पर।**

मार तो कपड़ों के काम करने वाले मजदूर वर्ग पर पड़ेगी।

● **अमित शाह का प्रदेश दौरा 21 से।**

भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता अब अपनी कालर सीधी करने लग जायेंगे। चेहरे को अगल-बगल में घूमाएंगे कि शाह जी की नजर उन पर पड़ जाये और टिकट मिल जाये।

● **रामदेवरा: किसानों को अब तक नहीं मिला मुआवजा।**

किसानों के मुआवजे के लिए कई कमियां निकाल देते हैं, पर जो सरकारी नौकरी से रिटायर्ड हो रहे हैं उन्हें सातवें वेतन आयोग का लाभ पहले से दे रहे हैं।

● **फर्जी दस्तावेज पर द्रव्यवती की जमीन पर कब्जा।**

बस मामला ठंडे बस्ते में जाने के बाद जमीन का जिसके नाम नोटिस जारी होता है उसी की हो जाती है। पट्टे लेने में यही काफी होता है।

● **एमएनआईटी में एडमिशन कराने का झांसा देकर 1.78 लाख रूपये ठगे।**

आजकल ऐसे ठग गली-कुचड़ी से लेकर कॉलेजों तक पहुंच गए हैं।

माधव विश्वविद्यालय ने ऐतिहासिक नगरी पाटनपुरी पर शोध शुरू किया

सरूपगंज, (निसं)। स्थानीय माधव विश्वविद्यालय द्वारा उदयपुर जिले में स्थित प्राचीन नगरी पाटनपुरी में पुरातात्विक शोध किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जे.एल. विज ने बताया कि माधव विश्वविद्यालय में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग स्थापित किया गया है, जिसके अन्तर्गत उदयपुर जिले के जसवंतगढ़ के समीप पदरेड़ा गांव में शोध कार्य प्रारम्भ किया गया है। विभाग के सहायक आचार्य प्रियंक तलेसरा एवं चिंतन ठक्कर के नेतृत्व में यह कार्य प्रारम्भ किया गया है।

ऐतिहासिक नगरी पाटनपुरी मेवाड़ की पावन धरा भक्ति एवं शक्ति के संगम से ओतप्रोत है। शूरवीरों की इस धरा पर कई ऐसे कला प्रेमियों ने जन्म लिया है जिन्होंने कला के प्रति अपने लगाव से इस संस्कृति को अधिक समृद्ध बनाया है। मेवाड़ के एतिहासिक पन्नों में दफन एक ऐसी ही नगरी है जो अपने काल में अत्यंत ही समृद्धशाली थी। इस नगरी का नाम है प्राचीन पाटनपुरी।

प्रियंक तलेसरा, चिंतन ठक्कर ने बताया कि उदयपुर जिले के गोगुन्दा तहसील के जसवंतगढ़ से लगभग सत्रह किलामीटर दूर एक गांव है जिसका नाम है पदरेड़ा अपनी सुरम्य प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण ये नगर अपने समय में पाटनपुरी के नाम से विख्यात था। ये प्राचीन नगरी ग्याहरवीं शताब्दी का प्रतिनिधित्व करती है। इस गांव में सड़क के किनारे एक मंदिर चारभुजा जी का है। इसका जीर्णोद्धार भी किया गया है, परन्तु इस मंदिर के आधार तल को देख कर ये प्रतीत होता है कि ये मंदिर अति प्राचीन रहा होगा। पास ही पड़े एक शिलालेख में ये ग्याहरवीं शताब्दी का होना प्रतीत होता है। समय के चलते शिलालेख में लिखी देवनागरी लिपि के अक्षरों के विक्षिप्त हो जाने के कारण उसे पढ़ पाना मुश्किल प्रतीत होता है। इसी मंदिर के प्रांगण में एक प्राचीन बावड़ी भी है जिसकी संरचना विचित्र है एवं उस बावड़ी के जीर्णोद्धार में भी इसी मंदिर के पुराने अवशेषों का प्रयोग किया गया है। इस बावड़ी का मुख्य द्वार बंद कर दिया गया है। गांव के बुजुर्गों से बात करने पर पता चला कि जब इस गांव में इस मंदिर के पास सड़क का निर्माण हुआ था, तब इस सड़क पर से वाहन गुजरने पर सड़क के नीचे से विचित्र आवाजें आती थी। ऐसा लगता था जैसे सड़क के नीचे का भाग खोखला हो , परन्तु समय के साथ साथ ये आवाजें भी आनी बंद हो गयी। इसी मंदिर के पास के खेतों में और भी अनेक मंदिरों के क्षत विक्षत अवस्था में पड़े अवशेष भी मिले हैं। जिनका गर्भ गृह कुछ लालची लोगों द्वारा खजाने का अंदेशा होने की वजह से खोदा हुआ है। उनमें से कुछ मंदिरों की दीवारों पर जैन तीर्थंकरों की मूर्तियां स्थापित होने से इन मंदिरों का जैन मंदिर होना प्रतीत होता है। इसी मंदिर से थोड़ी दूर खेत में एक अति सुन्दर एवं प्राचीन बावड़ी भी बनी हुई है जिसकी पत्थरों की चुनाई है। इस बावड़ी का स्थापत्य रमणीय है। स्थानीय लोग इसे काजल बावड़ी के नाम से संबोधित करते है। मुख्य सड़क से थोड़ा दूर जाने पर थाड़ी ऊंचाई पर भी स्थापत्य की दृष्टि से एक अति सुन्दर मंदिर भी बना हुआ है।

माधव विश्वविद्यालय द्वारा उदयपुर जिले में स्थित प्राचीन नगरी पाटनपुरी के संबंध में शोध किया जा रहा है। शोध के दौरान प्राचीन बावड़ी का इतिहास भी खंगाला जा रहा है।

- उदयपुर के पदरेड़ा गांव में पाटनपुरी के अवशेष तलाशे
- ये प्राचीन नगरी ग्याहरवीं शताब्दी का प्रतिनिधित्व करती है

रात को बाल कटने के साथ साथ दिन में भी कटने लगे बाल, ग्रामीणों में भय

कुचामनसिटी, (निसं)। कुचामनसिटी के पास मारोठ कस्बे में हो रही बाल काटने की घटना के बाद गांव में दहशत का माहौल थमा नहीं था कि अब आसपास के ग्रामों में भी महिलाओं के बाल काटने की जानकारी मिलने से पूरे ग्राम व आसपास के क्षेत्रों में ग्रामवासी काफी भयभीत नजर आ रहे है।

शनिवार को मारोठ थानान्तर्गत मिण्डा में दोपहर को घर में रह रही एक महिला के बाल काटने की घटना होने से मिण्डा में भी दहशत का माहौल बन गया। मामले की सूचना मिलने पर मारोठ थानाधिकारी ने मौके पर जाकर मामले की जानकारी ली। इसके साथ ही बाल काटने की घटना लुणवां व त्योद में भी शनिवार को ही होने से ग्रामवासी अपने परिवार के साथ ही घरों में एक साथ रहने को मजबूर हो गये व अपने काम धन्धों पर भी नहीं जा रहे हैं।

कुचामनसिटी के मारोठ कस्बे में कटी हुई चोटी दिखाते ग्रामीण।

- मिण्डा, लुणवां व त्योद में हुई बाल काटने की घटना
- ग्रामीण बचाव के लिये कर रहे जतन

बाल काटने की बढ़ती घटना व तेज गति से हो रहा प्रचार से आम लोगों के लिये परेशानी का कारण बन गया है। रात्रि में परिवार से सभी सदस्यों द्वारा घर व मौहल्लों में जाग कर गश्त लगाकर इसका पूरा ध्यान दिया जा रहा है। शुक्रवार को कस्बे में भी एक-दो स्थानों पर रात के समय परछाई के जैसे एक छत से कूदते हुए ग्रामवासियों के देखने पर उसका पीछा किया गया, लेकिन वह उस स्थान से गायब हो गया।

कस्बे में चर्चाओं का बाजार भी कई बातों से गर्म है। ग्रामवासी ये चर्चा कर रहे हैं कि आन्नदपाल का एन्काउन्टर करने में पुलिस को जिस प्रकार से कामयाबी मिली है, उसे देखते हुए बाल काटने वाले शख्स को भी पुलिस क्या ढूंढ पायेगी।

ग्रामीणों में महिलाओं व बच्चों के बाल काटे जाने की दहशत है और अलग-अलग अफवाहों के चलते ग्रामीण भोपों की शरण ले रहे हैं तो कई देवरे धोक रहे हैं। दो दिन से कस्बे सहित आसपास के गांवों में महिलाओं ने घरों के बाहर मेहंदी व सिंदूर के छापे लगाए, त्रिशूल बनाया।

वहीं ग्रामीण जेब में लहसून व प्याज के टुकड़े रख रहे हैं। इस अफवाह के चलते गांवों में सिंदूर व मेहंदी की बिक्री बढ़ गई है।

ज़नवाणी

स्वयं की उपेक्षा दु:ख का कारण

कहते हैं मानव जीवन ईश्वर द्वारा प्रदत्त अमूल्य धरोहर है लेकिन कितने ऐसे हैं जो इस ईश्वरीय सम्पदा का समुचित उपयोग कर रहे हैं। कोई माने या न माने लेकिन 99 प्रतिशत व्यक्ति बिना कोई लक्ष्य निर्धारित किये बस यूंही जीये जा रहे हैं। जब लक्ष्य/दिशा तय नहीं है तो भ्रमित होना स्वाभाविक है। तथ्यात्मक सच्चाई तो यह है कि तब तक स्वयं को दोष रहित न बना लिया जायेगा, स्वयं को परिष्कृत व व्यवस्थित नहीं कर लिया जायेगा कोई व्यक्ति संतुष्ट व संतुलित नहीं रह पायेगा। व्यक्ति की सबसे बड़ी कमजोरी यही है कि वह स्वयं को न बदल कर दूसरों की बदलने की चेष्टा में अपना जीवन व्यर्थ खपा देता है। सच ही है स्वयं का पूर्णत: परिष्कृत रूप ही संसार की सर्वोत्तम सेवा है। व्यर्थ भटकन से बचकर अपनी बिखरी शक्तियों को एकत्रित कर शांति/प्रसन्नता प्राप्त की जा सकती है।

–के.जी.मालव, बालदडा–बारां (राज.)

आम के आम गुठली के दाम

जयपुर शहर के अंदर निगम द्वारा सैकड़ों पार्क व एक गौशाला संचालित की जा रही है। पार्क के लिए ठेकेदारों को पैसा दिया जाता है, अगर इन पार्कों की हरी घास का चारा निगम की गौशाला को दिया जावे तो निगम को चारे के लिए काफी कम राशि खर्च करनी पड़ेगी। ठेकेदारों को तो यह ठेका 'आम के आम गुठलियों के दाम' वाला साबित हो रहा है। कृपया महापौर जी इस ओर ध्यान देकर राजस्व की बचत की जाये। **–सुनील कुमार पारीक, जयपुर (राज.)**

कार्टूनी नज़रिया

दक्कन क्रॉनिकल से साभार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 9 जुलाई, 2017

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, 'पूर्णिमा', रविवार, विक्रम संवत 2074, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, ऐन्द्रयन योग, बव करण, चन्द्रमा आज रात्रि 11:25 पर मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मिथुन, बुध-कर्क, गुरू-कन्या, शुक्र-वृष, शनि-वृश्चिक, राहु-सिंह, केतु-कुम्भ राशि में।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र सायं 4/48 तक, ऐन्द्रयन योग प्रात: 10:38 तक है। इसके पश्चात उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, वैधृति योग, बालव करण आरम्भ होगा।

आज राजयोग सूर्योदय से दिन 9:37 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग सायं 4:48 से सूर्योदय तक है। आज आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरू पूर्णिमा, सत्य व्रत, व्यास पूजा है।

आज से सन्यासियों का चातुर्मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:25 से 9:08 तक, लाभ-अमृत 9:08 से 12:32 तक, शुभ 2:14 से 3:56 तक।

राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक।

मेष

धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृष

मित्रों-रिश्तेदारों से आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

मिथुन

घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अनर्गल कार्यों में धन खर्च हो सकता है।

सिंह

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी।

कन्या

घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला

वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा। वाणी की कटुता के कारण परिवार में कलह-कटुता बढ़ने का भय है।

वृश्चिक

नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता हो सकती है। धार्मिक कार्यों में आस्था बढ़ेगी।

धनु

मन:स्थिति ठीक रहेगी। अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मकर

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। धार्मिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

कुंभ

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मीन

घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।